





وی. سُنے بیو

## چوہے کوملی پینسل

ایک ہاتصور کہانی وی.ستے بیو



## चूहे को मिली पेंसिल

CHUHE KO MILEE PENCIL

स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक चित्रकथा प्रगति प्रकाशन, मॉस्को के सीजन्य से प्रकाशित।

धित्र और कहानीः वी. सुतेयेव

उर्दू अनुवादः मजूर एहर्तेशाम टाइपसेटिंगः हनीफ अव्यल

सम्पादकीय सलाहः अनवारे इस्लाम

मार्च 2009/10000 प्रतियाँ 100 gsm मेपलियो व 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित। पराग इनिक्रिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित। ISBN: 978-81-89976-41-5

मृत्यः १५.०० रुपए

यह किताब हिन्दी/अँग्रेजी में भी उपलब्ध है।

## प्रकाशकः एकलव्य

ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

फोन: (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्स: (0755) 255 1108

www.eklavya.in

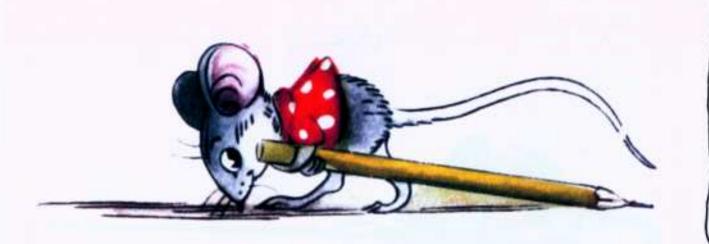
सम्पादकीयः books@eklavya.in

किताबें मैंगवाने के लिए: pitara@eklavya.in



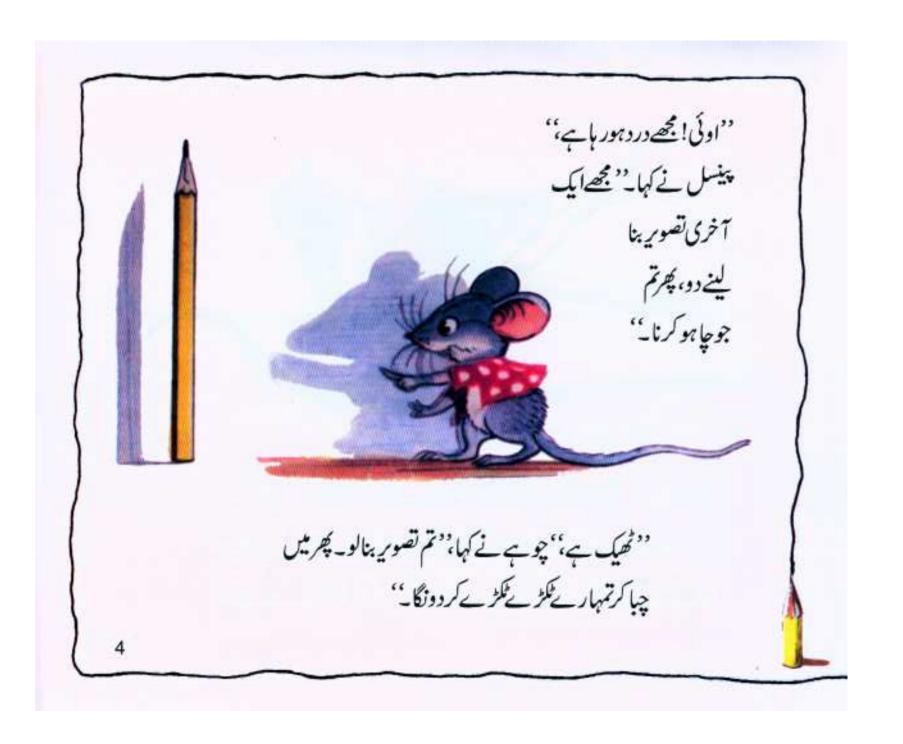
मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., फोन 2687 589

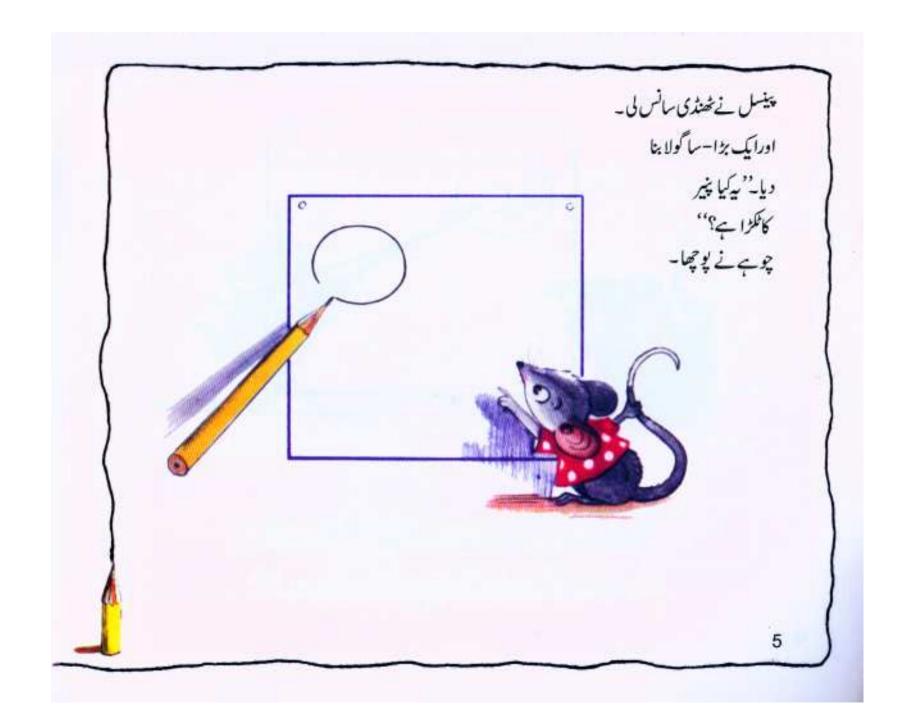


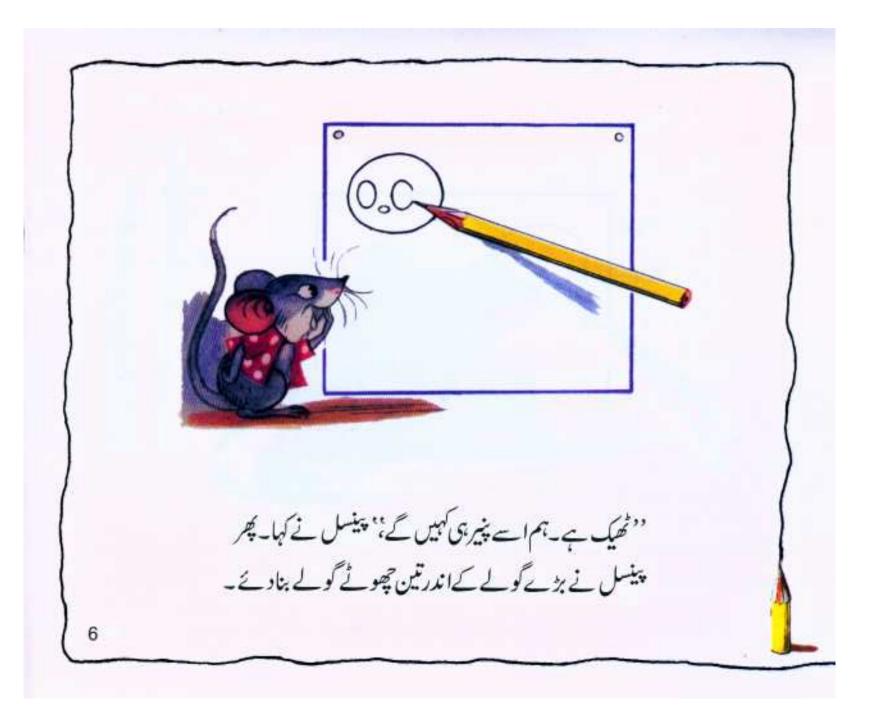


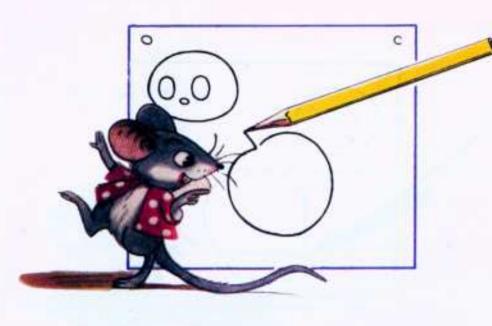
چوہا پینسل کیکرا ہے بل میں گئس گیا۔ '' مجھے چھوڑ دو، مجھے جانے دو،' پینسل چو ہے ہے گرد گڑا کر بولی۔''میں تمہارے کس کام کی ہوں ،ککڑی کا ٹکڑا ہوں۔ کھانے میں بھی اچھی نہیں لگوں گی۔''





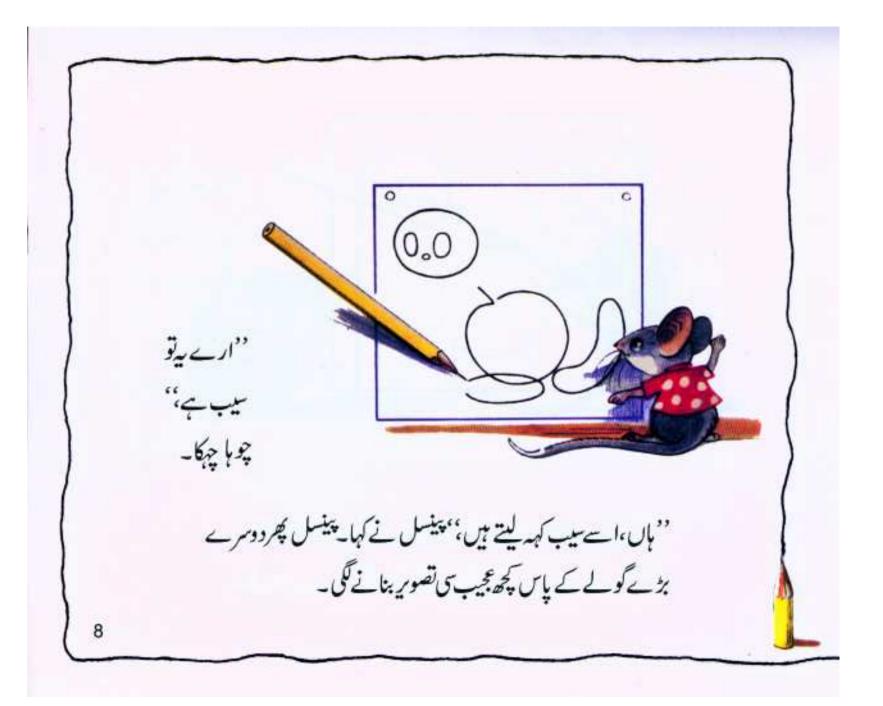


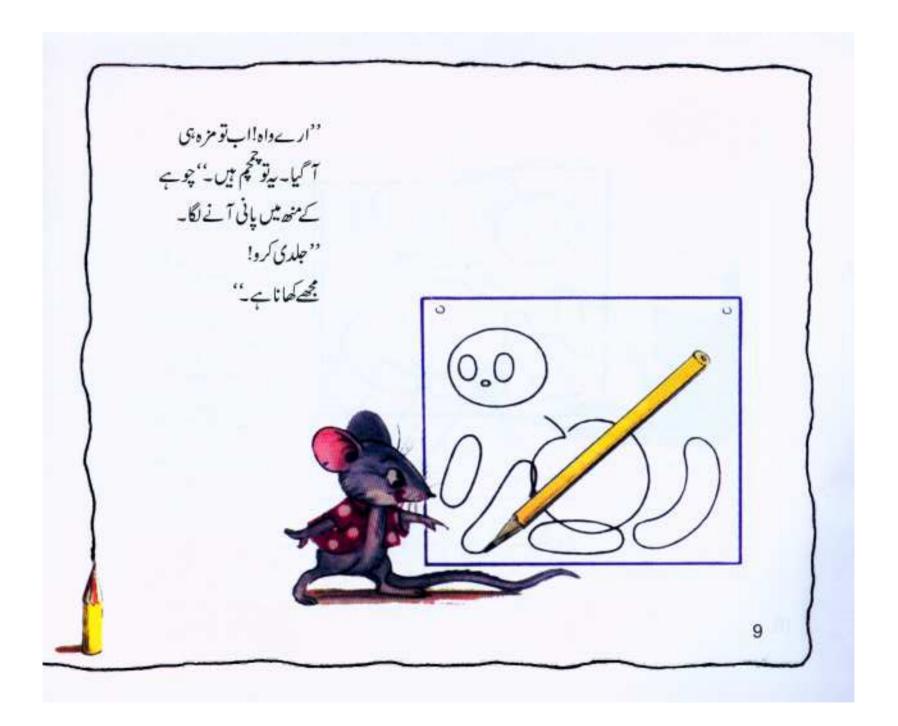


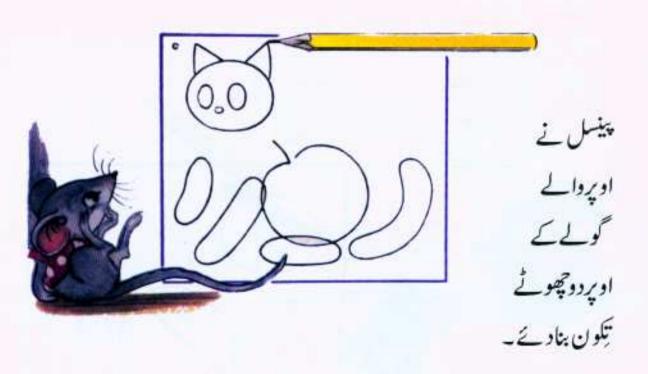


''ہاں اب سے پنیر ہی لگ رہا ہے،'' چوہےنے کہا۔ ''اس میں وہ چھید جونظرآ رہے ہیں۔''

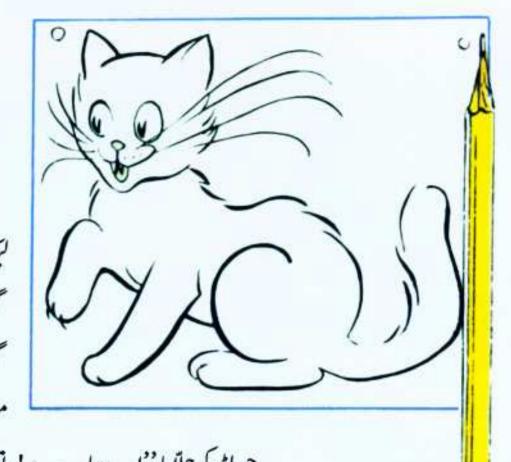
''چلو، ہم انہیں پنیر میں چھید بولیں گے۔'' پینسل نے مان لیا اوراس نے بڑے گولے کے نیچا یک اور بڑا گولا بنایا۔







"ارے،ارے!" چوہا چنجا۔" اب توتم اے بلی کی طرح بنانے لگیں۔اورآ گےمت بناؤ۔"



لیکن پینسل بناتی گئی۔اس نے او پرکے گولے پرلمبی۔لمبی مونچھیں اور منھ بنایا۔

> چوہاڈر کرچلا یا،''ارے باپ رے! یہ تو بالکل اصلی بلا لگ رہاہے۔ بچاؤ۔''









मूल्यः 15.00 रुपए